काव्य खंड

1

सूरदास

(जन्म : संवत् 1540 - निधन : 1620)

कवि–परिचय –

कृष्ण भक्त कवि सूरदास का जन्म संवत् 1540 में हुआ था। इनका जन्म स्थान आगरा और मथुरा के बीच स्थित 'रूनुकता' ग्राम माना जाता है। कुछ विद्वान दिल्ली के निकट 'सीही' ग्राम को इनकी जन्मस्थली मानते हैं। इनके पिता का नाम रामदास बताया जाता है। वार्त्ता–साहित्य और भक्तमाल के आधार पर ये सारस्वत ब्राह्मण कहे गए किन्तु 'साहित्य लहरी' में एक पद है जिससे ये पृथ्वीराज के अमात्य तथा राजकवि चन्दवरदाई के वंशज ब्रह्मभट्ट मालूम होते हैं। इस पद से बहुत सी बातें ज्ञात होती हैं। इसी पद के आधार पर कहा जाता है कि ये नेत्रहीन होने के कारण एक अन्धकूप में गिर पड़े थे। छह दिन वहाँ पड़े रहने के बाद भगवान श्री कृष्ण ने इन्हें दर्शन दिए और सनेत्र कर दिया। इस पर सूरदास ने कहा –''प्रभु जिन नेत्रों से आपके दर्शन हुए, अब उनसे मैं सांसारिक पापों को नहीं देखना चाहता।'' उनके निवेदन से नेत्र सदा के लिए बन्द हो गए लेकिन उन्हें प्रज्ञा–चक्षु प्राप्त हो गए।

सूरदास जन्म से अन्धे थे – यह विवादास्पद है। इस संबंध में अधिकांश विद्वानों का मत है कि वे जीवन के अंतिम समय में अंधे हुए थे, क्योंकि इसका प्रमाण हमें इनके पदों से मिल जाता है :–

''या माया झूठी की लालच दुहुँ दृग अंध भयौ।।''

आचार्य वल्लभ ने अपने सिद्धान्तों में सूरदास को दीक्षित किया और उसी समय से उनकी दास्य भाव की भक्ति सख्य भाव में परिणत हो गई। अपने गुरू वल्लभाचार्य की आज्ञानुसार इन्होंने ईश्वर की कथा को भाषा में वर्णन करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। सूरदास की उपलब्ध रचनाएँ तीन हैं – सूरसागर, साहित्य लहरी और सूर सारावली। सूरसागर इनका प्रामाणिक, अत्युत्तम एवं श्रेष्ठ काव्य ग्रन्थ है जो इनकी कीर्ति को अक्षय रखने के लिए पर्याप्त है। सूरदास ने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। इनके पूर्ववर्ती किसी भी कवि की भाषा में काव्य छटा न तो इतनी साहित्यिक है और न इतनी सौन्दर्यपूर्ण।

पाठ–परिचय –

प्रस्तावित पहले पद में कृष्ण और राधिका के प्रथम मिलन का वर्णन है। अपरिचय की दीवार कृष्ण के पहल से समाप्त होती है। राधिका बहुत चतुराई से कृष्ण की खूबियों एवं खामियों को व्याज–स्तुति में कह जाती है। अन्ततः कृष्ण, राधिका को संग खेलने के लिए आमंत्रित करते हैं। शेष तीन पदों में उद्धव और गोपिकाओं के संवाद हैं। इसे भ्रमरगीत के रूप में जाना जाता है। भ्रमरगीत हिन्दी साहित्य में अनुपम है। उद्धव निर्गुण ब्रह्म के प्रवक्ता के रूप में गोकुल आते हैं। किन्तु कृष्ण के सम्मोहन में डूबी गोपियों के विचार सुनकर उद्धव जी निरुत्तर हो जाते हैं। गोपिकाओं के उपालंभ विदग्धता और करुणा से भरे हैं। गोपियों के व्यंग्य

बाणों से उद्धव का हृदय छलनी हो जाता है और वे स्वयं कृष्णमय हो जाते हैं। आस्था के समक्ष उद्धव के सिद्धान्त फीके पड़ जाते हैं। प्रस्तावित समस्त पद गेय हैं।

पद

(1)

बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति काकी है बेटी, देखी नहीं कबहूँ ब्रज–खोरी।।
काहे को हम ब्रज–तन आवतिं, खेलत रहतिं आपनी पोरी।
सुनत रहतिं स्रवननि नंद ढोटा, करत फिरत माखन दधि चोरी।।
तुम्हरो कहा चोरि हम लैहें, खेलन चलो संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि, बातनि भुरई राधिका भोरी।।

(2)

मधुकर स्याम हमारे चोर।
मन हरि लियौ तनक चितवनि मैं, चपल नैन की कोर।।
पकरे हुते हृदय उर अंतर, प्रेम प्रीति कैं जोर।
गए छँड़ाइ तोरि सब बंधन, दै गए हँसनि अँकोर।।
चौंकि परी जागत निसि बीती, दूत मिल्यौ इक भौंर।
सूरदास प्रभु सरबस लूटयौ, नागर नवल किसोर।।

(3)

संदेसनि मधुबन कूप भरे।
अपने तो पठवत नहीं मोहन, हमरे फिरि न फिरे।।
जिते पथिक पठए मधुबन कौं, बहुरि न सोध करे।
कै वै स्याम सिखाइ प्रमोधे, कै कहुँ बीच मरे।।
कागद गरे मेघ, मसि खूटी, सर दव लागि जरे।।
सेवक सूर लिखन कौ आंधौ, पलक कपाट अरे।।

(3)

ऊधौ मन माने की बात।
दाख छुहारा छांड़ि अमृत फल, बिषकीरा बिष खात।।
ज्यों चकोर कों देई कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।
मधुप करत घर फोरि काठ मैं, बंधत कमल के पात।।
ज्यौं पतंग हित जानि आपनो, दीपक सौं लपटात।
सूरदास जाकौ मन जासौं, सोई ताहि सुहात।।

कठिन शब्दार्थ

खोरी	–	गली,	**पौरी**	–	दहलीज	**स्रवननि**	–	कानों से
ढोटा	–	पुत्र	**भुरइ**	–	बहकाना	**तनक**	–	जरा सी,
अँकोर	–	रिश्वत	**भौंर**	–	भ्रमर, भँवरा	**सरबस**	–	सर्वस्व
मधुबन	–	मथुरा	**सोध**	–	खोज	**प्रमोधे**	–	वश में करना
मसि	–	स्याही	**सर दव**	–	सरकंडों के जंगल	**दाख**	–	किशमिश
अघात	–	प्रसन्न	**सुहात**	–	रूचिकर			

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'दूत मिल्यौ एक भौंर' से आशय है –

   (क) भँवरा (ख) राधा (ग) गोपिकाएँ (घ) उद्धव

2. 'नागर नवल किसोर' विशेषण किसके लिए आया है :

   (क) उद्धव (ख) गोप (ग) कृष्ण (घ) श्यामा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. कृष्ण 'गोरी' संबोधन किसके लिए कर रहे हैं?
4. सारे बंधन तोड़ कर कौन कहाँ चला गया है?
5. गोपियों को भ्रमर के रूप में कौन–सा दूत मिला?
6. श्याम ने किसको सिखाकर वश में कर लिया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

7. कृष्ण ने भोली राधा को बातों में कैसे उलझा लिया?
8. कृष्ण ने एक झलक में ही गोपियों का मन कैसे वश में कर लिया?
9. मथुरा के कुएँ संदेसों से कैसे भर गए?
10. 'तजि अंगार अघात' से क्या तात्पर्य है?

निबंधात्मक –

11. कृष्ण एवं राधा की प्रथम भेंट को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए?
12. गोपियाँ कृष्ण को चोर क्यों सिद्ध कर रही हैं? विस्तारपूर्वक लिखिए।
13. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

    (क) संदेसनि मधुबन कूप भरे .... सेवक सूर लिखन कौ आंधौ, पलक कपाट अरे।।

    (ख) ऊधौ मन माने की बात .... सूरदास जाकौ मन जासौ, सोई ताहि सुहात।।